IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनाथ बच्चों की सामाजिक पहचान एवं उभरते संकट के आयामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

[1] संगीता शर्मा
[2] जय शंकर प्रसाद पाण्डेय
[1]शोधार्थी [2]प्रोफेसर
[1]समाजशास्त्र विभाग
[1]लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ उत्तर प्रदेश

सारांश- भारत में 1 अरब 40 करोड़ अनुमानित जनसंख्या निवास करती है, जिनमें से 40% जनसंख्या बच्चों की है । अधिक अनाथ बच्चों की संख्या में भारत प्रथम स्थान पर है । कुछ बच्चे छोटी उम्र में ही अपने माता–पिता खो देते हैं या उनसे अलग हो जाते हैं । प्रवास, स्वास्थ्य समस्या, घरेलू दुर्व्यवहार, विवाह विच्छेद एवं माता पिता की मृत्यु इसके प्रमुख कारण है । ऐसे बच्चे सड़क पर वैकल्पिक संस्थानों, सरकारी गैर–सरकारी अनाथालय में रहते हैं । समाज में अनाथ बच्चों की पहचान उपयुक्त समाजीकरण से वंचित एवं उपेक्षित वर्ग के रूप में की जाती है । अनाथ बच्चों को समाज में अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है । शोध पत्र का उद्देश्य अनाथ बच्चों की सामाजिक पहचान एवं अनाथ बच्चों के समक्ष उभरते संकटों का अध्ययन करना है । यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है एवं द्वितीयक् स्त्रोतों के माध्यम से आँकडो का संकलन किया गया है ।

मुख्य शब्द– अनाथ बच्चे, सामाजिक पहचान, वंचित वर्ग, समाजीकरण, सरकारी– गैर सरकारी अनाथालय, प्रवास, घरेलू दुर्व्यवहार, संकट ।

"एक बच्चा राष्ट्र की अत्यंत महत्वपूर्ण संपत्ति होता है उसके समुचित विकास में ही राष्ट्र का भविष्य देखा जा सकता है । आज का स्वस्थ, मजबूत और शिक्षित बच्चा कल का सक्रिय एवं बुद्धिमान बच्चा होता है । (रवीन्द्र नाथ टैगोर)

प्रस्तावना

भारत एक सनातन राष्ट्र एवं लोकतांत्रिक देश है । भारत को बहुजातीय, बहुभाषिक एवं बहुसांप्रदायिक पृष्ठभूमि वाला देश कहा जाता है । भारत भौगोलिक दृष्टि से विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है, जबकि जनसंख्या की दृष्टि में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है । भारत में 1 अरब 35 करोड़ अनुमानित जनसंख्या निवास करती है, जिनमें से 15.3 करोड़ 6 वर्ष से कम आयु के बच्चे हैं । तीसरी दुनिया के रूप में आधी से अधिक आबादी गरीबी में अपना जीवन यापन कर रही है । 7 अरब विश्व की आबादी में 2 अरब 20 करोड़ जनसंख्या बच्चों की है । दुनिया भर में 3 करोड़ 15 लाख बच्चे अनाथ है । GITNUX REPORT 2024 के अनुसार भारत की 4% बाल आबादी अनाथ है अर्थात् संख्या में लगभग 3.1 करोड़ बच्चें अनाथ है । 2020 में कोविड–19 महामारी आने के बाद से हजारों और बच्चे अनाथ हो गए हैं और सही आंकड़े अभी भी अज्ञात हैं, अकेले उत्तर प्रदेश में महामारी के परिणामस्वरूप 1000 से अधिक बच्चे अनाथ हो गए थे लेकिन वास्तविक आंकड़ा इससे भी कहीं अधिक हो सकता है ।

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार एवं समाज का दायित्व सर्वोपरि होता है । डेविस के अनुसार बालक के संदर्भ में परिवार प्रथम, सर्वाधिक प्रभावी, सर्वाधिक निकट एक संपूर्ण एजेंसी है । व्यक्तित्व के निर्माण में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका परिवार की है, वास्तव में बच्चें विभिन्न कारणों वश अपने माता पिता के सानिध्य एवं देखभाल से वंचित हो जाते हैं । संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, एच.आई.वी एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम के अनुसार कोई भी बच्चा जो अपने माता पिता मे से किसी एक को खो दिया है वह अनाथ है । इस परिप्रेक्ष्य में मातृत्व अनाथ वह बच्चा है जिसकी माता नहीं होती एवं पितृत्व अनाथ वह बच्चा है जिसके पिता नहीं हैं एवं दोहरा अनाथ वह बच्चा है जिसके माता–पिता दोनों नहीं होते हैं । बच्चों के अनाथ होने के कारणों में प्राकृतिक आपदा, विवाह विच्छेद, शादी से पहले हुए बच्चे, लैंगिक असमानता, एचआईवी एड्स, विकलांगता, घरेलू दुर्व्यवहार, प्रवास, स्वास्थ्य समस्या, गरीबी एवं संघर्ष आदि प्रमुख कारण है ।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

अनाथ बच्चों की परिभाषा : एकल या दोहरे माता पिता को खोने वाले बच्चों को एक अनाथ के रूप में परिभाषित किया जाता है। अनाथता की कोई विशेष आयु नहीं होती हैं।

अनाथालय : अनाथालय को एक ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक संगठन द्वारा चलाया जाता है, जहां अनाथ बच्चे रहते है तथा उनकी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

अनाथ के प्रकार

1–एकल अनाथ
2–मातृ अनाथ
3–पितृ अनाथ
4–पूर्ण अनाथ

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

सिद्धिकी,एन.जे.(1997). शोधकर्ता ने दिल्ली में चार अनाथालयों में 157 अनाथ लड़कियों का गहन अध्ययन किया और यह जांचा की किस प्रकार लड़कियां सामाजिक बुराई का शिकार होती है । समाज के कमजोर वर्गों में किशोर अनाथ लड़कियों को भी उपेक्षित एवं कमजोर वर्ग के रुप में देखा गया है ।

वाकर,ए.,एवं अर्ली, जे.(2010). इस अध्ययन के तीन उद्देश्य रखे गये है, पहला सिएरा लियान में परित्यक्त बच्चों के बीच स्वास्थ्य और कल्याण में बाधा डालने वाले कारकों की पहचान करना, दूसरा अनाथ और परित्यक्त बच्चों की देखभाल के लिए बाधाओं की पहचान करने के लिए गैर सरकारी कार्यकर्ताओं का अध्ययन एवं तीसरा सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए संगठनात्मक और सामुदायिक क्षमता का निर्माण करने वालों कारकों का अध्ययन किया गया है ।

नायक,बी.के.(2014). शोधकर्ता ने कमजोर बच्चों के बीच जोखिम, सुरक्षा कारकों और लचीलापन की पहचान करने के लिए यह अध्ययन किया और निष्कर्ष दिया कि अधिकांश अनाथ और कमजोर बच्चों को परिवार, स्कूल एवं समुदाय से संबंधित जोखिम कारकों का सामना करना पड़ा और अनाथ एवं कमजोर बच्चों को सामान्य बालकों की तुलना में कम लचीला पाया गया ।

दीन.आर.एम.(2020). शोधकर्ता ने गंधारवाल के 6–18 वर्ष आयु वर्ग के 857 अनाथ बच्चों का अध्ययन किया, उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर में अनाथों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है जिसका कारण संघर्ष है । जिसके परिणामस्वरुप बच्चों और परिवारों को प्रवास, शोषण, असुरक्षा, गरीबी, अलगाव, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इस शोध में बताया गया कि यहाँ के सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं ने कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी ।

अली.एस.(2021). प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी के गैर सरकारी अनाथालयों पर आधारित है इस अध्ययन में विशेष रुप से ध्यान अनाथ बच्चों जीवन यापन में संस्था की भूमिका, उनके समाजीकरण में उनका योगदान एवं उनके शैक्षिक एवं मनौवैज्ञानिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है । अध्ययन से ज्ञात हुआ कि गैर सरकारी अनाथालयों में रह रहे बच्चों का समुचित विकास पालन पोषण होता है ।

अध्ययन का उद्देश्य

1- प्रथम उद्देश्य अनाथ बच्चों की सामाजिक पहचान का अध्ययन करना करना ।
2- द्वितीय उद्देश्य अनाथ बच्चों के समक्ष उभरते संकटों का अध्ययन करना ।

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

अनाथता एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है, जिसके फलस्वरुप बच्चों को समाज में रहकर अनेक कठिनाईयों का सामना एवं सुख सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है । कई समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है, जिनसे सम्बद्ध करके अनाथ बच्चों की स्थिति पर प्रकाश डाला जा सकता है– जीन प्याजे (1969) का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त मानव बुद्धि एवं विकास से सम्बन्धित सिद्धान्त है । प्याजे के अनुसार बालक अपने वातावरण, परिवेश के साथ मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए सीखता है । बालक द्वारा अर्जित ज्ञान स्थायी नहीं रहता यह जीवन के प्रत्येक अवस्था में बदलता रहता है । अनाथ बच्चें जिस वातावरण परिवेश में रहते है वहाँ उनका संज्ञानात्मक एवं मानसिक विकास सामान्य बच्चों के समान नहीं हो पाता है जिसके कारण उनके सोचने समझने का तरीका सामान्य बच्चों से भिन्न होता है । सी.एच.कूले ने अपनी पुस्तक ह्युमन नेचर एंड सोशल आर्डर में बच्चें समाज से कैसे सीखते है? स्पष्ट करने के लिए आत्मदर्पण का सिद्धान्त दिया । जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी दर्पण में अपना स्वरुप देखने का प्रयास करता है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वरुप समाजरुपी दर्पण में देखने का प्रयास करता है हर बालक में यह इच्छा होती है कि परिवार एवं समाज में लोग उसे किस प्रकार देखते है । इस प्रकार वह अपने बारे में राय बनाता है एवं बालक के अन्दर श्रेष्ठता और हीनता की भावना का विकास होता है । हरबर्ट मीड ने अपनी पुस्तक माइंड सेल्फ एंड सोसाइटी में आत्म की चेतना को समाजीकरण का आधार मानते है यह आत्म की चेतना सामाजिक होती है इसका निर्माण अन्तःक्रिया के फलस्वरुप होता है । सी.एच.कूले के अनुसार बच्चों के समाजीकरण में प्रथम स्थान परिवार का होता है, परन्तु अनाथ बच्चों का समाजीकरण तो परिवार से अलग होता है उनका परिवार तो पूरा समाज ही होता है । अनाथ बच्चों के प्रति समाज का दृष्टिकोण एवं समाज के प्रति अनाथ बच्चों के दृष्टिकोण को समझने के लिए लोकपद्धतिविज्ञान विधि का प्रयोग करेंगे ।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है । सभी आँकडे एवं सूचनाओं को द्वितीयक स्त्रोतों जैसे लेख, समाचार–पत्रों, संगठनात्मक वेबसाइट, सरकारी रिपोर्टों और जर्नल आदि से एकत्र किये गये है एवं डेटा का उचित रुप से विश्लेषण किया गया है ।

परिणाम एवं चर्चा

अनाथ बच्चों की सामाजिक पहचान एवं उभरते संकट के आयाम

अनाथ बच्चों को समाज में पहचान मिलना आवश्यक है । बच्चों के अनाथ होने के प्रमुख कारण सामाजिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक होते है । यह कोई व्यक्तिगत पसंद नहीं होती है । यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष) के अनुसार दुनिया भर में हर दिन लगभग 10,000 बच्चें पैतृक अनाथ या तो मातृ अनाथ हो जाते है । पिछले 20 वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं में लगभग 7,50,000 लोग मारे गए और परिणाम स्वरूप हजारों बच्चे अनाथ हो गए

। इनमें से 79% बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, फिलीपींस और भारत जैसे गरीब एशियाई देशों के थे, जिनमें अनाथ बच्चों की संख्या सबसे अधिक थी । सामाजिक पहचान के अंतर्गत व्यक्ति स्वयं को समाज एवं समूह के सदस्यों के रूप में देखता है और उन सदस्यों के बीच रहकर अपने को सुरक्षित पाता है । लेकिन अनाथ बच्चे स्वयं को समूह एवं समाज से पृथक समझते है क्योंकि इस अलगाव की भावना का विकास उन बच्चों में समाज एवं समूह के बीच रहने से होता है । हमारे समाज में अनाथ बच्चों की पहचान उपेक्षित वंचित एवं कमजोर के रूप में की जाती है अर्थात एक ऐसा वर्ग जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक रूप से पिछड़ा हुआ है ।

जब कोई बच्चा माता–पिता में से किसी एक को खो देता है तो उसे समाज में असंख्य संकटों का सामना करना पड़ता है । वह बच्चे कमजोर और रक्षाहीन हो जाते हैं एवं उन्हें शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना का भी सामना करना पड़ता है, उदाहरण के लिये उन पर चिल्लाना, अपमानित करना, दूसरे बच्चों से सदैव तुलना करना, अधिक दबाव डालना एवं जबरदस्ती किसी कार्य को करवाना, इन बच्चों के व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है । ऐसे बच्चे समाज की मुख्यधारा से अलग हो जाते हैं । कुछ लोगों द्वारा उनकी मदद की जाती है, नहीं तो अधिकांश लोगों द्वारा उनकी उपेक्षा की जाती है । औद्योगिकरण एवं नगरीकरण की दोहरी प्रक्रिया सहित आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने गरीबी की भयावह स्थिति उत्पन्न की एवं पारिवारिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है (रीमा कुमारी 2006) विश्व की लगभग एक तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व बच्चे करते हैं, लेकिन अत्यधिक गरीबी में रहने वाले सभी लोगों का लगभग आधा हिस्सा बच्चे हैं । (यूनिसेफ)

बच्चों के अनाथ होने के प्रमुख कारण

हमारे समाज में बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिनके माता–पिता या तो जीवित नहीं है या तो किसी न किसी कारण से उन्हें त्याग दिया गया है ऐसे बच्चों को समाज में एकाकीपन का सामना करना पड़ता है एवं उन्हें अनेक खतरों और जोखिमों का सामना करना पड़ जाता है । बच्चों के अनाथ होने के कारण निम्नलिखित है–

प्राकृतिक आपदा– बच्चों के अनाथ होने का एक प्रमुख कारण प्राकृतिक आपदाएं है । प्राकृतिक आपदा के अंतर्गत भूकंप, सुनामी, बाढ़, सूखा, भूस्खलन आदि आते हैं जिसके फलस्वरुप आर्थिक, मानवीय, पर्यावरण एवं क्षेत्र विशेष के बहुत बड़े भाग एवं वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या को क्षति पहुंचती है एवं बहुत से लोगों की जान चली जाती है और अनेकों परिवार टूट जाते हैं ।

युद्ध एवं संघर्ष– देश के बीच होने वाले युद्ध एवं संघर्ष बच्चों के अनाथ होने एवं उनके माता–पिता से अलग होने के प्रमुख कारणों में से एक है । युद्ध एवं संघर्ष का सबसे विकराल रूप कश्मीर में देखने को मिलता है । जहां हमेशा अनेकों बच्चे अनाथ हो जाते हैं, जिसमें अधिकांश सैनिकों के बच्चे होते हैं ।

महामारी– महामारी अनेकों बीमारियां जो स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालती है । महामारी का एक बहुत भयानक रूप हमने कोरोना महामारी के रूप में देखा जिसने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया है ।

विकलांगता– बच्चों के अनाथ होने का एक प्रमुख कारण विकलांगता है । यह एक शारीरिक समस्या है जो कुछ बच्चों को प्रभावित करती है । कई बार विकलांग बच्चों को माता–पिता द्वारा स्वीकार न करने की स्थिति में उनका त्याग कर दिया जाता है, क्योंकि कई माता–पिता आर्थिक रूप से सुदृढ़ ना होने के कारण उनका इलाज करने में असमर्थ रहते हैं एवं कई माता–पिता विकलांग बच्चों के साथ समाज में रहने में स्वयं को असहज महसूस करते हैं ।

लिंग भेद– हमारे समाज में बच्चों के अनाथ होने कारण में एक प्रमुख कारण लिंग भेद है जिसके फलस्वरूप लड़की की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि अधिकांश लड़कियों को माता–पिता द्वारा त्याग दिया जाता है । टाइम्स आफ इंडिया रिपोर्ट के अनुसार 1 करोड़ 10 लाख बच्चे पैदा हुए जिसमें से 90% लड़कियां थी ।

अत्यधिक निर्धनता– अनाथता का एक प्रमुख कारण गरीबी है । गरीबी भुखमरी आदि के कारण हर 3 सेकंड में एक बच्चे की मौत हो जाती है, जिससे हर दिन औसतन 10,000 बच्चों की मौत हो जाती है (यूनिसेफ) । गरीबी

के कारण भी माता–पिता द्वारा बच्चों का पालन पोषण न करने की स्थिति में उन्हें सरकारी गैर सरकारी अनाथालय में छोड़ दिया जाता है ।

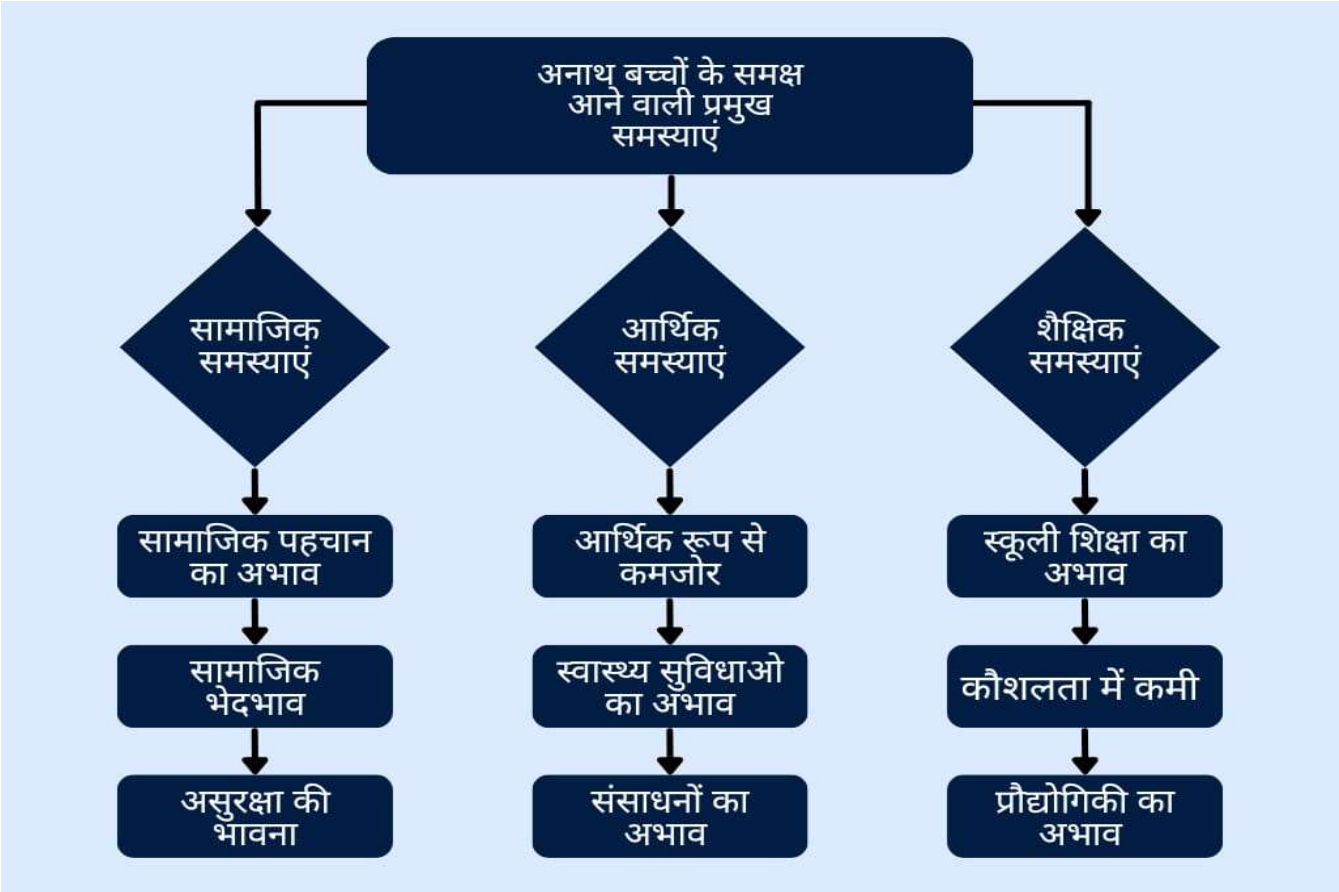

वर्तमान समाज की मुख्य समस्या अनाथ बच्चों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक समस्याओं में असाधारण वृद्धि है । कई अनाथ बच्चे उपयुक्त मानको को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं, अनाथ बच्चों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक समस्याएं अनावश्यक दुखों और तनाव का कारण बनती है । हमारे समाज में अनाथ बच्चों के लिए कई संकट .है एवं अधिकांश उन बच्चों के लिए जो सड़क पर रहते हैं, उनका शारीरिक, मानसिक शोषण किया जाता है । कई बच्चों को बाल श्रम करने के लिए मजबूर किया जाता है एवं कई बच्चों से जबरन गलत कार्य कराए जाते हैं । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 24 के तहत 14 वर्ष से कम आयु के किसी बालक को किसी कारखाने या खान में काम करने के लिए नहीं रखा जाएगा की बात की गई है । भारत में अनाथ बच्चों की संख्या में वृद्धि महामारी के कारण पहले की तुलना में और अधिक हो गई है । कोविड–19 महामारी ने लगभग 4 लाख लोगों की जान ले ली । महामारी के प्रथम और दूसरी लहर के कारण अनेक बच्चे अनाथ हो गए । राष्ट्रीय संरक्षण आयोग के अनुसार 30,071 बच्चे अनाथ हो गए, जिन्होंने अपने माता–पिता को खो दिया है । कई बाल अधिकार संगठन ने दावा किया है कि सरकार द्वारा बताई गई संख्या से कहीं अधिक है । अनाथ बच्चों की सामाजिक, आर्थिक एवं भावनात्मक उपेक्षा के फलस्वरुप ही इन बच्चों का विकास अवरुद्ध होता है (मैहर,बी.के. 2015)

निष्कर्ष

आज के बच्चे कल के भावी युवा बनेंगे एवं देश की उन्नति में अपना योगदान देंगे । बच्चों के व्यक्तित्व विकास में प्रथम रूप से परिवार का दायित्व सर्वोपरि होता है, पर अनाथ बच्चे परिवार के प्यार, सम्मान, संरक्षण, सानिध्य से वंचित रह जाते हैं । उन बच्चों के सर्वांगीण विकास का दायित्व समाज, सरकारी–गैर सरकारी अनाथालय एवं सरकार का होता है । सरकार द्वारा बहुत सी योजनाएं जैसे एकीकृत बाल संरक्षण योजना, बच्चों की

देखभाल योजना आदि कई योजनाएं चलाई जा रही हैं । कई सरकारी गैर सरकारी अनाथालय अनाथ बच्चों की देखभाल पालन पोषण की जिम्मेदारी अच्छे से वहन कर रहे हैं परंतु कहीं–कहीं उन बच्चों का शारीरिक मानसिक शोषण भी किया जाता है । उपयुक्त समाजीकरण, अधिकार, विभेदता, सामाजिक नियंत्रण में कमी के कारण अनाथ बच्चे अपराधों के प्रति अग्रसर हो जाते है । हमारे समक्ष यह संकट है कि किस प्रकार हम अनाथ बच्चों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं । समाज में उनकी पहचान बनाने के लिए सामान्य बच्चों की तरह प्रोत्साहित कर सकते हैं ।

अतः अनाथ बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अनाथ बच्चों के विकास के लिए सुरक्षित वातावरण होना आवश्यक है, सिर्फ अनाथ बच्चों की देखभाल करना और उन्हें केवल बुनियादी आवश्यकता जैसे भोजन कपड़ा एवं शिक्षा प्रदान करना ही नहीं बल्कि उन बच्चों को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करना भी आवश्यक है। सभी सरकारी–गैर सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र, सामाजिक कार्यकर्ताओं, आम जनता के त्वरित और निरंतर प्रयास के साथ इन बच्चों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा सकता है ।

सुझाव

1)अनाथ बच्चों के लिये चलाये जा रही योजनाओं एवं कार्यक्रमों का योजनाबद्ध तरीकों से क्रियान्वयन किये जाये ताकि सुविधाओं का लाभ अनाथ बच्चों को मिल सकें ।

2)अनाथ बच्चों की समस्याओं को दूर करने के लिये समय–समय पर काउंसलिंग की व्यवस्था होनी चाहिये।

3)अनाथ बच्चों को कामचलाऊ शिक्षा न देकर भविष्योन्मुख शिक्षा देने का प्रयास किया जाना चाहिये।

4)अनाथ बच्चों की देखभाल एवं पालन पोषण के लिये जो सरकारी–गैर सरकारी संस्थायें चलाई जा रही है उनका समय–समय पर जाँच किया जाना चाहिये जिसके फलस्वरुप इन बच्चों के प्रति हो रहे अनुचित व्यवहार को रोका जा सकें।

5)अनाथ बच्चों के प्रति समाज के हर एक व्यक्ति को अपना दृष्टिकोण परिवर्तित करके उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास करना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Sidhiqqui,N.J.(1997).Adolescent Orphan Girls in Delhi A sociological profile.Regency publication.
- Walker,A.&Early,J.(2010).WeHave Do Something For Ourselves: Using Photovoice and Participatory Action Research to Assess The Barriers To Caregiving For Abandoned And Orphaned Children In Sierra, 33-48.
- Nayak,B.K.(2014).Orphans Problems And Community Concern In Ethopia. International Journal Of Management And Social Science Research(IJMSSR),3(1),8-15.
- Mehar,V.K.(2015).Development Among Children Living In Orphanages of Odisha An Eastern Indian State. Journal Of Dental And Medical Sciences.
- Din,R.M.U.(2020).Sociological Study Of Orphans A Case Study Of District Ganderwal. Central University of Kashmir.

- Ali,S.(2021). Institutionalization, Socialization And Rehabilitation Of Orphans (Sociological Study Based On Non Government Orphanage Of Varanasi). Banaras Hindu University,Varanasi.
- https://www.jagran.com
- https://shodhganga.inflibnet.com
- https://www.unicef.org/media/orphans
- https://en.wikipedia.org/wiki/orphan
- ilmuk.org
- www.insamer.com
- Gitnux.org